For More Hindi Books, Please Visit:

http://kitabghar.tk

Read Hindi Kahaniyan, Upanyas, Kavita & Much More On:

http://HindiKiBindi.tk

Read Jyotish-Vastu Tips Online in Hindi at:

http://Jyotish.tk

Latest Cricket News, Durlabh Video, Dilchasap Jaankari :

Http://CricketNama.tk

http://kitabghar.tk

HindiBooksOnline.Blogspot.com

Kitabghar

Visit us for More!

Http://Kitabghar.tk

सांझ

— डॉ जगदीश गुप्त

शशि को पुतली में भर कर, जब से मैंने दृग मीचे
कितने सागर लहराए, भीगी पलकों के नीचे।

उस रूप राशि को जिसका स्वरूप कवि की पलकों में युगों युगों तक समाया रहेगा।

जिस दिन से संज्ञा आई
छा गयी उदासी मन में
ऊषा के दृग खुलते ही
हो गयी सांझ जीवन में। ।1। ।

मुँह उतर गया है दिन का
तरूओं में बेहोशी है
चाहे जितना रंग लाये
फिर भी प्रदोष दोषी है । ।2। ।

रवि के श्रीहीन दृगों में
जब लगी उदासी घिरने
संध्या ने तम केशों में
गूँथी चुन कर कुछ किरने। ।3। ।

जलदों के जल से मिल कर
फिर फैल गये रंग सारे
व्याकुल है प्रकृति चितेरी
पट कितनी बार संवारे। ।4। ।

किरनों के डोरे टूटे
तम में समीर भटका है।
जाने कैसे अम्बर में,
यह जलद-पटल अटका है। ।5। ।

रश्मियाँ जलद से उलझीं,
तिमिराभ हुई अरूणाई।
पावस की साँझ रंगीली,
गीली-गीली अलसाई। ।6। ।

अधरों की अरूणाई से,
मेरी हर साँस सनी है
उन नयनों की श्यामलता,

Kitabghar

जीवन में तिमिर बनी है।।7।।

आँसू की कुछ बूँदों में,
सारा जीवन सीमित है।
पलकों का उठना-गिरना,
मेरे सुख की अथ-इति है।।8।।

प्रतिकूल हुये जब तुम ही,
तब कूल कहाँ से पाऊँ,
सुधि की अधीर लहरों में,
कब तक डुबूँ-उतराऊँ।।9।।

उस दिन तुमने हाँ कहकर,
निश्छल विश्वास दिलाया।
अब कितने अब्द बिताऊँ,
ले एक शब्द की माया।।10।।

बुझ सकी न प्यास हृदय की,
अधरों की मधुराई से।
कुछ माँग रही है जैसे,
तरूणाई तरूणाई से।।11।।

Kitabghar

तुम हो कि सतत नीरव हो,
संध्या की कमल-कली से।
गुंजन भी छीन लिया है,
बंदी मधु-मुग्ध अली से।।12।।

इस विस्तृत कोलाहल में,
मैं पूछ रहा अपने से।
वे सत्य हृदय के सारे,
क्यों आज हुये सपने से।।13।।

क्या उस सम्पूर्ण सृजन की,
निर्मम परिपूर्ति व्यथा थी।
जो कुछ देखा सपना था,
जो कुछ भी सुना कथा थी।।14।।

वीथियाँ विकल बिलखातीं,
बलखाती बहती धारा।
अब भी मेरे मानस में,
बसता प्रतिबिम्ब तुम्हारा।।15।।

Http://Kitabghar.tk

घन–छाया में सोती हों,
ज्यों श्रमित अमा की रातें।
वह केश–पाश वेसुध सा,
करता समीर से बातें।।16।।

या भूल गये हो निज को,
अपनी सीमा से बढ़कर।
चरणों को चूम रहे थे,
क्यों मुक्त केश सिर चढ़कर।।17।।

बँध गये स्वयं बँधन भी,
श्यामल सुषुमा श्रेणी में।
छवि सागर लहराते थे,
उस एक विषम वेणी में।।18।।

आनन–सरोज को तजकर,
अथवा अलियों की अवली।
सारी निशि बंदी रह कर,
यौवन–प्रभात में निकली।।19।।

Kitabghar

कौमुदी छीन लेने को,
चल पड़े सघन श्यामल घन।
शशि के मुख पर बिखरी थी,
किसकी अलकों की उलझन।।20।।

लख वंकिम भू–रेखा से,
निज धनु–प्रभाव भी धीमा।
मानो मनोज ने रच दी,
मुख–छवि असीम की सीमा।।21।।

गूँथी अबोध कलिकाएं
तारिका पाँति सकुचाई।
केशों की सघन निशा में,
चेतना स्वयं अलसाई।।22।।

उस अरूण सलज आनन में,
वे दो रँगराती आँखें।
किस तितली ने फैला दीं
पाटल–प्रसून पर पाँखें।।23।।

कब दी बिखेर यौवन ने,
मुख पर कुंकुम–मंजुषा।
सकुचाई साँझ नयन में,

Http://Kitabghar.tk

विकसी कपोल पर ऊषा।।**24**।।

कब नूपुर के कलरव से,
तन में तरूणाई जागी।
कब, कटि-केहरि के भय से,
भोली किशोरता भागी।।**25**।।

कब आँखों के आँगन में,
पुतली ने रास रचाया।
अनुराग हृदय का सारा,
खिंचकर अधरों पर आया।।**26**।।

चुपके से किसने कह दी,
कानों में यौवन-गाथा।
तन सकुच देख कर मन ही-
मन में मन सकुच रहा था।।**27**।।

पलकों का गिरना, गिरि पर,
गिर गई तड़प कर बिजली।
अलकों का हिलना नभ में,
बदली ने करवट बदली।।**28**।।

Kitabghar

उर कुसुम-हार का कंपन,
गति थी सशस्त्र मन्मथ में।
या मचल उठा हो कोई,
झरना पथरीले पथ में।।**29**।।

अनुराग चिन्ह बनते थे,
पग-ध्वनि के आलापों से।
लालिमा लिपट जाती थी,
उन गोरी पद-चापों से।।**30**।।

कलियों के कर से जैसे,
प्याली मरंद की छलकी।
मेरे प्राणों में गूँजी,
रूनझुन रूनझुन पायल की।।**31**।।

स्वर्गंगा की लहरों में,
शशि ने छिप जाना चाहा।
जिस दिन प्यासे नयनों ने,
उस रूप-सिंधु को थाहा।।**32**।।

किस रूप-सिंधु को मथ कर,

Http://Kitabghar.tk

विधि ने मुख–इंदु निकाला।
विष के प्रभाव से जल कर,
हो गई श्याम कच–माला।।**33**।।

नयनों के निधनंजय ने,
पी लिया हलाहल सारा।
झलका श्यामल पुतली की,
ग्रीवा में बनकर तारा।।**34**।।

इस तरल गरल से भीगी,
उठ गई दृष्टि दिशि–दिशि को।
दिन को सन्तप्त बनाया,
तमपूर्ण कर दिया निशि को।।**35**।।

मुख–इन्दु रश्मि–स्यंदन के,
चंचल चंचल मृग देखूँ।
यदि मिले देखने को तो,
युग–युग तक युग दृग देखूँ।।**36**।।

दृग–समता को ले आऊँ,
आखें शशि के हिरनों की।
चढ़ व्योम–वाम पर जाऊँ,
लेकर कंमद किरनों की।।**37**।।

तारावलियाँ संचित कर,
दे डाली नवल प्रभा, या–
रवि को शशि को पिघला कर,
विरची विरंची ने काया।।**38**।।

झलमल–झलमल होती थी,
वह देह–लता अम्बर में।
ज्वालाएँ सी उठती हों
जैसे अमृत के सर में।।**39**।।

यौवन–प्रभात में मैंने,
उस कनक–लता को देखा।
ज्यों हरी दूब पर पड़ती,
सुकुमार धूप की रेखा।।**40**।।

विकसित सरोज बढ़ते हैं,
पर नहीं डूबते जल में।
फिर बसे नयन रहते क्यों,
मेरे मानस के तल में।।**41**।।

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

हो गई मदन के धनु की,
डोरी कुछ ढीली-ढीली।
भौंहों को वंकिम करके,
जब चितवन चली रसीली।।**42**।।

दशनावलियों के पीछे,
कुछ मुसकानें आ बैठीं।
शबनमी-राशि में जैसे,
रेशमी रश्मियाँ पैठीं।।**43**।।

यौवन-तरंग उठ-उठ कर,
खो जाती भुज-मूलों में।
छवि-सुर-तरंगिनी बहती,
आकुल दुकूल-कूलों में।।**44**।।

अनबोली कली लजा कर,
छिप गई कहीं झुरमुट में।
मुकुलित सौरभ की गाथा,
गूँजी कवि के श्रुतिपुट में।।**45**।।

Kitabghar

उत्सुक नयनों से देखा,
सपनों का लिया सहारा।
पर मिला नहीं उस छवि का,
कोई भी कूल-किनारा।।**46**।।

कोमल कोमल पंखुरियाँ,
लिपटीं थीं भोलेपन से।
विह्वल अलि अभिलाषा के,
उड़ चले अभागे मन से।।**47**।।

चू पड़े अविकसित कलि पर,
कुछ ओस-विंदु आँसू के।
हैं पलकें विकल अभी तक,
जल बिखर गया, दृग चूके।।**48**।।

ज्वाला सी उठी हृदय में,
अधरों के आलिंगन से।
भूचाल आ गया सहसा,
अन्तरतम के कंपन से।।**49**।।

उन बड़ी-बड़ी आखों में,
वे बड़ी-बड़ी दो बूँदें।

Http://Kitabghar.tk

पड़ गई सोच में, कैसे,
मन के रहस्य को मूँदें।।50।।

उस मधुर सलोनी छवि को,
छूकर दोनों दृग पुलके।
सिहरी-सिहरी पलकों पर,
आँसू के श्रम-कण ढुलके।।51।।

चितवन की मधुराई का,
आस्वादन जलन सदृश था।
थी एक नयन में मदिरा,
दूसरे नयन में विष था।।52।।

दी खींच हृदय पर रेखा,
उन अनियारे नयनों ने।
अन्तर के कोमल कोने,
छू दिये चपल पलकों ने।।53।।

आकुल केकी-दल नाचा,
सुन मधुर-मधुर मृदु गर्जन।
कर गई मेघ-मालाएँ,
जीवन का मुखर-विसर्जन।।54।।

Kitabghar

कसमसा उठे आलिंगन,
हो बैठे नयन तरल से।
खिंच गये स्नेह के बंधन
कुछ और भीग कर जल से।।55।।

नभ देख रहा था भू के
यौवन की फुलवारी को।
भू देख रही थी नभ को,
नयनों की लाचारी को।।56।।

बढ़ती ही गई दिनोदिन,
दोनों की देखा-देखी।
सहसा नभ ने उर-पट पर,
करूणा की रेखा देखी।।57।।

क्रीड़ा छिप गई क्षणों में,
पीड़ा ही मैंने जानी।
वह एक ठेस मीठी सी,
बन बैठी सजल कहानी।।58।।

Http://Kitabghar.tk

मैं चौंक उठा अपने में,
जैसे कुछ खो बैठा था।
केवल दो चार क्षणों में,
क्या से क्या हो बैठा था।।**59**।।

शशि को पुतली में भर कर,
जब से मैंने–दृग–मींचे।
कितने सागर लहराये,
भीगी पलकों के नीचे।।**60**।।

करूणा की गहरी धारा,
अभिलाषाओं की आँधी।
मैंने पलकों में रोकी,
मैंने सासों से बाँधी।।**61**।।

कोमलता बनी कहानी,
मैं निष्ठुरता से हारा।
किन शैलों से टकराई,
मेरे जीवन की धारा।।**62**।।

Kitabghar

कर गया कौन नयनों से,
जल–फूलों की बौछारें।
बिछ गई मौन हो मग में,
मेरे मन की मनुहारें।।**63**।।

यह कौन हृदय में आकर,
कोमलता को मलता है।
छल छल छल छलक–छलक कर,
नयनों से बह चलाता है।।**64**।।

हो गया एक ही पल में,
अवसान रम्य जीवन का।
किससे टकराकर टूटा,
सब तारतम्य जीवन का।।**65**।।

कुछ बिखरीं कुछ कुम्हलाई,
मुख म्लान हुआ आधों का,
सुधिके अधीर झोकों में,
लुट गया विपिन साधों का।।**66**।।

निश्वासों से गति पाई,
घिर गये दृगों में आकर।
करूणा के बादल बरसे,

Http://Kitabghar.tk

यौवन गिरि से टकराकर।।67।।

जितनी विपदाएँ आई,
सब सहता रहा अकेले।
जीवन में पग रखते ही,
मैंने कितने दुख झेले।।68।।

पोंछे कब किसने आँसू,
अपने अदोष अंचल से।
केवल प्रवंचना पाई,
उन मुसकानों के छल से।।69।।

अब तो प्रतिपल पलकों को,
रहते हैं आँसू घेरे।
फिर ही न सके फिर वे दिन,
जबसे तुमने दृग फेरे।।70।।

जबसे सौन्दर्य तुम्हारा,
मेरे नयनों से रूठा।
सुख की स्वतंत्र सत्ता का,
अभिमान हो गया झूठा।।71।।

Kitabghar

जिस दिन मन की लहरों ने,
निष्ठुरता के तट चूमें।
पलकों में जो सपने थे,
सब डूब गये आँसू में।।72।।

जिन मुस्कानों पर रीझा,
उनसे न कभी फिर पाया।
सैंकड़ों बार धीरे से,
मैंने मन को समझाया।।73।।

ठोकर सी लगी अचानक
अन्तर के आधारों को।
जब समझ न पाये तुम भी,
उन्मन, उन मनुहारों को।।74।।

भयभीत हो उठीं साँसें,
मन का कण-कण थर्राया।
अपना सब कुछ देकर भी,
जब तिरस्कार ही पाया।।75।।

Http://Kitabghar.tk

मत मेरी ओर निहारो,
मेरी आँखें हैं सूनी।
फिर सुलग उठेंगी साँसें,
फिर धधक उठेगी धूनी।।76।।

धीरे-धीरे होता है,
उर पर प्रहार आँसू का।
नभ से कुछ तारे टूटे,
बँध गया तार आँसू का।।77।।

तटहीन व्योम-गंगा में,
तारापति-तरनी तिरती।
तारक बुदबुद उठते हैं,
पतवार किरन की गिरती।।78।।

छिप गया किसी झुरमुट में,
मेरे मन का यदुवंशी।
करूणा-कानन में गूँजी,
आकुल प्राणों की वंशी।।79।।

Kitabghar

स्वर-स्वर्गंगा लहराई,
उर-वीणा के तारों में।
खो गई हृदय की तरणी,
लहरीली झँकारों में।।80।।

सासों से अनुप्राणित हो,
कोमल कोमल स्वर-लहरी।
कानों के मग से आकर,
सूने मानस में ठहरी।।81।।

चंचल हो चली उँगलियाँ,
छिद्रान्वेषण करने को।
पर नाच उठीं जाने क्यों,
मुरली का मन हरने को।।82।।

आगत की स्वर-लहरी में,
झलके अतीत के आँसू।
किसने तारों को छेड़ा,
आगये गीत के आँसू।।83।।

कुछ डूब गये थे तारे,
छवि-धारायें उर्मिल थी।
रजनी की काली आँखें,

Http://Kitabghar.tk

हो चली तनिक तन्द्रिल थी।।84।।

दुख कहते हैं, पग-पग पर,
करूणा का सम्बल देंगे।
जीवन की हर मंजिल पर,
दृग कहते हैं, जल देंगे।।85।।

आशा प्रदर्शिका बनकर
करती निर्देश दिशा का।
मैं सोच रहा हूँ - चल दूँ,
ज्यों ही हो अन्त निशा का।।86।।

कोलाहल-मय जगती के,
त्यागे आह्वान घनेरे।
फिर भी एकाकीपन में,
मुझको मेरे दुख घेरे।।87।।

काली-काली रजनी में,
काले बादल घिर आये।
या बुझे हुये सपने हैं,
नभ के नयनों में छाये।।88।।

Kitabghar

चाँदनी पी गई आँखें,
छलके पलकों के साथी।
माधुरी अधिक थी विधु में,
या सुधि में अधिक सुधा थी।।89।।

प्यासी पलको पर उतरी,
पूनो के शशि की किरने।
घुल-घुल कर पिघल-पिघल कर,
फिर लगीं बिखरने, गिरने।।90।।

खो गया गगन पलकों में,
पुतली पर तम की छाया।
धीरे-धीरे नयनों के -
तारों में चाँद समाया।।91।।

विधु को छूने के पहले,
पड़ी दृष्टि तारों पर।
पी सकी अमृत बेचारी,
पग रखकर अंगारों पर।।92।।

अन्तर की तरलाई में,

Http://Kitabghar.tk

तारक–समूह तिर आया।
पुतली के अतल तिमिर पर,
छवि–छाया पथ की छाया।।**93**।।

फिर तिमिर–चिकुर चिर चंचल,
अंचल छू उठे दिशा का।
भर गया गगन–गंगा से,
सीमित सीमंत निशा का।।**94**।।

विषमय विषाद में उरके,
डूबी है अमृत–कलाएँ।
उज्ज्वल मयंक के मुख पर,
काली कलंक–रेखाएँ।।**95**।।

अगणित परिवार व्यथा के,
मेरे प्राणों में पलते।
मैं मोमदीप हूँ जिसके,
जलने से अश्रु निकलते।।**96**।।

निर्दोष निसर्ग–निलय में,
चिर तिमिर–ज्योति की माया।
तुम बढ़े दीप के आगे,
हो चली दीर्घतर छाया।।**97**।।

रजनी–प्रकाश के मुख पर,
बदली ने अंचल डाला।
चाँदनी तनिक सकुचाई,
हो गया गगन कुछ काला।।**98**।।

किरनो ने बादल–दल से,
जब आँख–मिचौनी खेली।
भावना मिलन की मन में
बन बैठी विरह–पहेली।।**99**।।

मिलनातुर छाया पथ में,
गतिशील रजनि जब होती।
तब टूट–टूट अम्बर से,
गिरते तारों के मोती।।**100**।।

उस दिन मैं नभ–गंगा के,
तट से निराश फिर आया।
उस दिन मैं शशि के मधुमय,
घट से निराश फिर आया।।**101**।।

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

लेकिन मेरे फिरते ही,
फिर गई नज़र अम्बर की,
सुख शरद-निशा के सिर से,
सारी तुषार की सरकी।।102।।

तारों की उज्ज्वल लिपि में,
निशि ने निज दुख लिख डाला।
पर मेरी दुख-लेखा का,
अक्षर-अक्षर है काला।।103।।

देखा है कोई सपना,
नभ की पलकें भारी हैं।
वह कौन बिंदु था जिससे,
तारावलियाँ हारी हैं।।104।।

वह कैसा आलिंगन था,
जिस पर ऊषा मुस्काई।
अधरों का छूना-छूना,
निशि ने हिमराशि लुटाई।।105।।

Kitabghar

नयनों ने जैसे कोई,
उत्सुक उत्सव देखा हो।
श्यामल पुतली के ऊपर,
बन गई एक रेखा हो।।106।।

अमृत की प्यासी आँखें,
मुख छवि तकती घूमेंगी।
मानस की कोमल लहरें,
सुकुमार चरण चूमेंगी।।107।।

सुरधनु सी उन बाँहों को,
भुज-पाश रहेंगे घेरे।
आओ भी तो पलभर को,
पावन-प्रदेश में मेरे।।108।।

तुम हो, तम हो, निर्जन हो,
सौन्दर्य-सुधा-रस बरसे।
कुसुमायुध वेध रहा हो,
अंतर केशर के शर से।।109।।

रजनी के अन्तिम क्षण में,
चुपके-चुपके ऊषा बन।

Http://Kitabghar.tk

तुम कौन स्वप्न में आये,
भर गये दृगों में हिमकन।।110।।

उस क्षण तुमको पाते ही,
जल होकर बहा समर्पण।
कितने दिन इन प्राणों में,
अकुलाता रहा समर्पण।।111।।

सौ बार समय-सागर में,
लय होंगे साँझ-सवेरे।
तुम गिन न सकोगे फिर भी,
धड़कने हृदय की मेरे।।112।।

सिर पर भौंरो सी काली,
दुख की छाया गहरी थी।
सुमनावलियाँ रोती थीं,
आँखों में ओस भरी थी।।113।।

झुलसी थीं उत्पीड़न से,
पंखुरियाँ आतप-मारी।
जलकण बन ढलक गई थीं,
सौरभ की सिसकन सारी।।114।।

Kitabghar

आँसू-शबनम के कन में,
ढालते अपरिमित मद को।
तुम कौन किरन से आये,
रंग गये उदार जलद को।।115।।

मच गया विकल-कोलाहल,
रजनी के अन्तःपुर में।
किरनों की कोमल लपटें,
जब उठीं तिमिर के उर में।।116।।

ज्यों ही ऊषा तिर उतरी,
धुँधली सी क्षितिज पटी पर।
नवनीत-श्वेत सुमनों की,
मधु-वृष्टि हुई अवनी पर।।117।।

आँसू-श्रमकण से बोझिल,
पलकों के पंख पसारे।
उड़ गये नयन-नीड़ो से,
सपनों के विहग बिचारे।।118।।

Http://Kitabghar.tk

निशि ने श्लथ-केश समेटे,
नत नयन-कुमुद सकुचाये।
ऊषा ने अरूणांचल से,
तारों के दीप बुझाये।।**119**।।

मेरे प्रसुप्त जीवन में,
आई जागृति की बेला।
अधमुँदे दृगों से देखा,
मैंने सुकुमार उजेला।।**120**।।

नन्हीं-नन्हीं बूँदों से,
शीतलता बिखर रही थी।
निर्मल जल से घुल-घुल कर,
हरियाली निखर रही थी।।**121**।।

झुक गई दूब की पलकें,
आँसू का भार सम्हाले।
पागल समीर ने आकर,
सब मोती बिखरा डाले।।**122**।।

Kitabghar

धीरे-धीरे ऊषा ने,
नीरज की आँखें खोली।
पंखों को मुखर बनाकर,
कुछ भ्रमरावलियाँ बोलीं।।**123**।।

हिल उठे सनाद जलज-दल,
हो गया सलिल लहरीला।
गिर इन्दु-बिन्दु ने सर में,
कर ली समाप्त निज लीला।।**124**।।

अवशेष चार-छै बूँदें,
जो भी थीं पंखुरियों पर।
चुन लिया उन्हें चुपके से,
रवि की किरनों ने आकर।।**125**।।

मैं पूरित-पुलक पुलिन से,
सब कौतुक देख रहा था।
दृगजल की नश्वरता को,
शबनम में लेख रहा था।।**126**।।

बीचियाँ चपल आ आकर,
छू जाती थीं चरणों को।
मैं मसल उठा आँसू से,

Http://Kitabghar.tk

भीगे कुछ धूलि कणों को।।127।।

जब एक-एक कर नभ से,
सब तारक खिसक रहे थे।
सूनी प्रभात-बेला में,
सुख-सपने सिसक रहे थे।।128।।

आहों की धूमिल रेखा,
हो गई धवल धुल-धुल के।
नयनों से आँसू बनकर,
जब पुलक हृदय के ढुलके।।129।।

युग-युग से रहे समाये,
इत अश्रुलीन पुतली में।
फिर भी तुम जान न पाये,
दृग हैं कितने पानी में।।130।।

किसने निज गुन से बाँधी,
कल्पना-विहग की पाँखें।
खुल गई देखकर किसको,
मेरे सपनों की आँखें।।131।।

Kitabghar

रजनी भर रहा निरखता,
मैं दोनों पलक पसारे।
कब कौन कहां से आया,
रच गया ओस कन सारे।।132।।

तुम रमते रजत-रजनि से,
वेसुध छवि की छलकों में।
फिर इन्दु-बिन्दु बन जाते,
जाने क्यों इन पलकों में।।133।।

परिमल-जल से बोझीली,
पंखुरियाँ झुकी हुई थीं।
ढुलकी-ढुलकी कुछ बूँदे,
कोरों पर रूकी हुई थीं।।134।।

ये भरे-भरे से आँसू,
वे रँगे-रँगे से कोये।
अरूनाई के डोरो में,
किसने जल-फूल पिरोये।।135।।

Http://Kitabghar.tk

ऊषा के स्मिति-इंगित की,
गति से हिल उठीं हिलोरें।
किरनों के अनुशासन में,
सन गई जलद की कोरें।।**136**।।

मेरे प्रसुप्त पौरूष में,
तुम प्रकृति बने मुसकाये।
जग उठा स्नेह, सपनों से,
मैंने दृग-द्वार सजाये।।**137**।।

कुछ सूख चली आँखों को,
आँसू अथाह दे जाता ।
संदेश स्निग्ध सुमनों का,
जब सुरभिवाह दे जाता।।**138**।।

वनमाली ! इन्हें न छेड़ें,
देखो समीर के झोंके।
ये सुमन नहीं हैं, मन हैं,
अनबोली लतिकाओं के।।**139**।।

पायें तो कर पल्लव से,
सबके सब कुसुम छिपालें।
उल्लास हृदय का सारा,
कैसे कह डालें डालें।।**140**।।

सब रूप-राशी संस्कृति की,
अलकावलियों में मूँदी।
डालो ने अपनी वेणी,
मधु-मंजरियों से गूँदी।।**141**।।

कुसुमों की निष्ठुरता से,
सिहरन है विश्वासों में।
यह पवन नहीं है, गति है,
उपवन के निश्वासों में।।**142**।।

सौरभ-स्वर में कहती सी,
जैसे कुछ अपने जी की।
नूपुर सी बज उठती है,
प्रत्येक कली जुही की।।**143**।।

परिमल की विमल-विभा से,
निस्पंद हो रहा नभ है।
इतने ससीम सुमनों में,

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

कितना असीम सौरभ है।।144।।

कलियों की पलकें डोलीं,
झुक गई लजीली डाली।
छवि-तन्द्रिल तरूणाई में,
हो गई सफल शेफाली।।145।।

इसके झोकों से उलझें,
उसकी साँसों के श्रमकण ।
तुम मुझसे मिलीं, विसुध हो,
मिलते ज्यों सुरभि-समीरण।।146।।

कब से गति-गहन विजन में,
फिरती थी मारी-मारी।
रख सिर समीर के उर पर,
सो रही सुरभि बेचारी।।147।।

गर्वित हो सुरभि न कैसे,
अपने सौभाग्य प्रचुर पर।
निखरी प्रसून के उर पर,
बिखरी समीर के उर पर।।148।।

Kitabghar

धीरे से पल्लव हिलता,
धीरे से हिमकण ढलते।
धीरे से हृदय मचलता,
धीरे से अश्रु निकलते।।149।।

धीरे से हो जाता है,
सारा जीवन-घट रीता।
धीरे से मुरझा जाती,
तरूणाई नव-परिणीता।।150।।

खिल उठा मुकुल-दल सुरभित,
छवि अखिल भुवन में छाई।
साकार हो गई सहसा,
जैसे तरू की तरूणाई।।151।।

कामिनी-कुंज में खोई,
रजनी की सारी माया।
तारक प्रसून वन बैठे,
द्रुमदल में तिमिर समाया।।152।।

Http://Kitabghar.tk

जितना वैभव जो चाहे,
कामिनी–विटप से लेले।
हीरक से सुमन सलोने,
मरकत से दल अलबेले।।**153**।।

जाने कितनी कोमल हैं,
चू पड़ती तनिक छुये से।
हिम–धवल पाँच पंखुरियाँ,
शर पंच पंचशर के से।।**154**।।

हो गये पार अन्तर के,
मैं देख रहा भूला सा।
मेरी साँसो–साँसों में,
कीमिनी–कुंज फूला सा।।**155**।।

सुधियों में बेसुध होकर,
मैंने सब सुधबुध खोई।
जीवन की गीली गाथा,
कामिनी–कुंज में सोई।।**156**।।

Kitabghar

पीली पराग कणिकाऐं,
किंजल्क–जाल में उलझीं।
इस उलझन के चिंतन से,
चिंता की अलकें सुलझी।।**157**।।

लिपटी जाती हैं तरू से,
बल खा–खाकर वल्लरियाँ।
रहती हैं पर फैलाये,
ऊपर सौरभ की परियाँ।।**158**।।

सौरभ की चलाचली में,
यह मौन व्यथा भर लाये।
किस तप्त श्वास को छूकर,
कामिनी–कुसुम कुम्हलाये।।**159**।।

सूना मन, सूना जीवन,
सूने दिन, सूनी रातें।
सूनी–सूनी आँखों में,
छाई दुख की बरसातें।।**160**।।

धुँधले अतीत की स्मृति में,

Http://Kitabghar.tk

खोया–खोया सा निश्चल।
शिखरों पर टिककर जैसे,
कुछ सोच रहा है बादल।।**161**।।

कल्पने ! वहां पर ले चल,
स्वर जहां निखर जाता हो।
रश्मियाँ नृत्य करती हो,
तारक–समूह गाता हो।।**162**।।

नीरव नीरद के पट पर,
बूँदों के घुँघुरू छमके।
संगीत स्वप्न लखता हो,
चंचल चपलाएं चमकें।।**163**।।

रिमझिम–रिमझिम पावस का,
कल जल–तरंग बजता हो।
लय में लय हो जाने को,
नव इन्द्र–धनुष सजता हो।।**164**।।

पलकों के शिथिल क्षितिज पर,
दिन–रात जलद छाते हैं।
वरदान उमड़ आते हैं,
अभिशाप बरस जाते हैं।।**165**।।

निर्मम हिम–शैल–शिखर से,
जब भी जाकर टकराते।
मेरी करूणा के बादल,
सब चूर–चूर हो जाते।।**166**।।

विक्षुब्ध प्रलय–प्लावन में,
आँसू का जलधि विकल हो।
पलकों के नीचे जल हो,
पुतली के ऊपर जल हो।।**167**।।

नभ में निरीह तिरता है,
लेकर समीर की पाँखें।
बूँदें बादल के आँसू,
बिजली बादल की आँखें।।**168**।।

वह कौन अमृत आशा है,
किसकी साधना अमित है।

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

बिजलियाँ सतत डसती हैं,
फिर भी पयोद जीवित है।।169।।

डगमग पग गगन-डगर में,
झूमतीं निगाहें भोली।
कादम्ब पिये आती है,
कादम्बिनियों की टोली।।170।।

जिनसे दृग भर लेने को,
अमरो के हृदय तरसते।
बिजली की मुसकानों से,
सोने के फूल बरसते।।171।।

अन्तर हैं विसुधि-युगों का,
हैं कोसों दूर बसेरे।
फिर भी इस सधन निशा में,
कितने समीप तुम मेरे।।172।।

तुम चले लहर कर जैसे,
आ गई बाढ़ यौवन में,
भर गया दृगों में पानी,
कितनी बिछलन थी मन में।।173।।

कल्पना सिहर जाती है,
उठ़ती है पीर हृदय में।
बिजलियाँ जलद में जैसे,
चुभते हैं तीर हृदय में।।174।।

मैंने छवि की छाया के,
संकेत हृदय पर आँके।
बादल-दल के पीछे से,
तुम कौन तड़ित से झाँके।।175।।

पीड़ा से रोते-रोते,
पड़ गये सभी रँग फीके।
बादल-समूह पर होते,
नित कशाघात बिजली के।।176।।

मिल गई धूल में धरती,
मस्तक झुक गये द्रुमों के।
हिल उठी दिशाएँ सारी,

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

थे क्रुद्ध पवन के झोंके।।177।।

इतना जल ले आई हैं,
कितने लोचन कर छूँछे।
कल-कल करती सरिता की,
लहरों से कोई पूँछे।।178।।

धरती पर उजले जल के,
कन छलक-छलक कर ढलके।
फिर से पावस भर लायी,
सुरमई कलश बादल के।।179।।

जब नयन सरल स्वीकृति दें,
ढीली पड़ जायें भौंहें।
अपने असत्य के पीछे,
छिपकर रह जायें सौंहें।।180।।

फिर भी न तुम्हें मैं देखूँ,
अखिर यह कैसी बातें।
जायेंगी बिन बरसे ही,
क्या यह रस की बरसातें।।181।।

Kitabghar

वह कौन गगन में प्रतिदिन,
दामिनी-कवच कस आता।
ले इन्द्र-धनुष हाथों में,
बूँदों के तीर चलाता।।182।।

घायल है सारी धरती,
छिद-छिद कर जल-बाणों से।
मैं सब कुछ देख रहा हूँ,
अपना मन मौन मसोसे।।183।।

पंथी हूँ, पथ भूला हूँ,
जीवन की दोपहरी में।
जाने दो दोपल पलकें,
लग, दृग-छाया गहरी में।।184।।

वरूनी के कुंज कटीले,
फिर भी कितने सुखदाई।
पुतली से छलक रही है,
जैसे शीतल तरलाई।।185।।

Http://Kitabghar.tk

काजल की काली रेखा,
जल–भरी बदलियों जैसी।
श्रम, तृषा, जलन, हरने को,
घिर–घिर आती है कैसी।।**186**।।

अरूणाई के मृदु डोरे,
डूबे रँग में ऊषा के।
सुलझा न सका हूँ मैं भी,
जिन में निज को उलझा के।।**187**।।

जगमग–जगमग हो उठता,
किसकी छवि से उर–आसन।
तुम कौन किया करते हो,
मेरी साँसों पर शासन।।**188**।।

आदेश दृष्टि उठते ही ,
शत शत दृग झुक जाते हैं ।
ये बंदी प्राण बिचारे,
दिन रात विरूद गाते हैं।।**189**।।

Kitabghar

शापित है विधि कृति कह कर,
सह ही लेंगे दुःख सारा।
तुम सुखी रहो निश्चल हो,
युग युग तक विभव तुम्हारा।।**190**।।

मैं बैठ गया अवनी पर,
दुख में खोया खोया सा।
तरू छाया थी शीतल या,
कोई सपना सोया सा।।**191**।।

पग पग पर मैने अपने,
चंचल प्राणों को रोका।
पर बहा ले गया बरबस,
उनकी सांसों का झोंका।।**192**।।

यह किस प्रदेश की भूली,
भाषा सिखते रहते हैं।
मुख पर आंसू अक्षर से,
दृग क्या लिखते रहते हैं।।**193**।।

Http://Kitabghar.tk

सारे आंसू कल सूखे,
पलकें रूक कर झुक जायें।
जब दोनो नयन अभागे
पथ देख देख पथरायें।।**194**।।

तब दबे पांव तुम आना,
चुपचाप चुराने साँसें।
जायेंगी निकल स्वयं ही,
तन से समीर की फाँसें।।**195**।।

यौवन की आतुरता में ,
जो भूल कभी हो जाती।
जीवन भर उसकी सुधि से,
दहका करती है छाती।।**196**।।

तज कर यथार्थ की कटुता,
कैसे भविष्य को आँकूँ।
अपनो की निर्ममता को,
कब तक सपनों से ढाँकूँ।।**197**।।

Kitabghar

शत झंझावात प्रलय के,
सोते हैं इसी हृदय में।
इतने कोमल कंपन भी,
होते हैं इसी हृदय में।।**198**।।

जीवन की समरसता को,
हम कितना और सराहें।
अधखुले तुम्हारे लोचन,
अधखिली हमारी चाहें।।**199**।।

जाने कितनी कोमलता,
मेरे उर में संचित है।
पर निष्ठुर तुम्हारा वैभव,
अब भी उससे वंचित है।।**200**।।

तुम हो तटस्थ गिरिमाला,
मैं मधु-निर्झर निर्मल हूँ।
जितने ही तुम निष्ठुर हो,
उतना ही मैं कोमल हूँ।।**201**।।

विश्वास करो तुम मेरी,

Http://Kitabghar.tk

निश्वासों के क्रंदन पर।
विश्वास करो तुम मेरी,
पीड़ा के भोलेपन पर।।**202**।।

डालो न हँसी की चादर,
अभिलाषाओं के शव पर।
विश्वास करो तुम मेरे,
निश्वासों के शैशव पर।।**203**।।

अधरों में मृत्यु सजाकर,
जीवन को बहलाऊँगा।
दोगे यदि मुझे गरल भी,
चुपके से पी जाऊँगा।।**204**।।

तुम मौन देखते रहना,
किंचित भी तड़प न होगी।
निश्चलता अचल बनेगी,
जैसे समाधि में योगी।।**205**।।

Kitabghar

रजनी की निर्ममता से,
दिन के सुकुमार मिलन को।
यह साँझ सतत गूँथेगी,
किरनों से हास-रूदन को।।**206**।।

पुतली के घिरे तिमिर पर,
संध्या की आभा छाई।
पीली पलकों के नीचे,
कितनी लालिमा समाई।।**207**।।

यौवन के ज्वाला-वन में,
लपटों की ललित लतायें।
अंगार-कुसुम बरसाकर,
भय है, न कहीं बुझ जायें।।**208**।।

जीवन की क्षण भंगुरता,
छू-छू कर हँसते-हँसते।
ऊषा की दीपशिखा पर,
तारों के शलभ झुलसते।।**209**।।

सीमित असीम हो उठना,
अभिलाषाओं का क्रम है,

Http://Kitabghar.tk

चिर प्यास अमर जीवन है,
संतोष एक विभ्रम है।।210।।

झुक गये शिथिल दृग दोनों,
रूँध गई कंठ में वाणी।
अधरों का मधुर परस-रस,
कर सका न मुखरित प्राणी।।211।।

कोई न जिसे पढ़ पाया,
ऐसी रहस्य लेखा हो,
मेरी पीली पीड़ा में,
तुम एक अरूण रेखा हो।।212।।

भोले से भ्रू-भंगों में,
सुख की अभंग आशा थी।
उन मीठी मुस्कानों में,
जीवन की परिभाषा थी।।213।।

मेरे प्राणों के पथ पर,
सबने अंगार बिखेरे।
कोई न मिला जीवन में,
पल भर जो प्यार बिखेरे।।214।।

Kitabghar

जीवित जिसकी साँसों में,
मृत मानवता का स्वर हो।
तुम भी न जिसे छू पाये,
मेरा अस्तित्व अमर हो।।215।।

वरूनी-मूलों में उलझे,
श्रमसीकर करूण-कथा के।
दृगद्वारों पर बाँधे हैं,
या वन्दनवार व्यथा के।।216।।

वह पहली रीझ दृगों की,
इति-इतिहासों का अथ है।
रस-सिद्धि प्राप्त करने में,
सौन्दर्य-साधना पथ है।।217।।

ये छवि-छलनाऐं लेकर,
सुधि की पतवारें कर में,
तिरती हैं स्वर्ण-तरी सी,
मन के प्रशान्त सागर में।।218।।

Http://Kitabghar.tk

स्वीकृति नकार बन बैठी,
किंचित संशय हरने में।
क्या मिला तुम्हें बतलाओ,
विश्वासघात करने में।।**219**।।

कर सका कौन आकर्षण,
संपूर्ण प्रलुब्ध हृदय को,
कोई न शान्ति दे पाया,
मेरे विक्षुब्ध हृदय को।।**220**।।

सुन सको अगर तो सुन लो,
मेरे अन्दर की बातें।
कहता है कहीं किसी से,
कोई निज घर की बातें।।**221**।।

मुरझाये किंजल्को में,
किंचित मकरंद न छोड़ा।
तुमने रक्तिम हाथों से,
सुमनों का हृदय निचोड़ा।।**222**।।

Kitabghar

अब इन्हें कुचल भी डालो,
गज-गतिशाली पंकज से।
सम्भव है फिर जी जायें,
छूकर पावन पद-रज से।।**223**।।

जिसकी सुधि-सुधा छलकती,
रहती नित पलकों पर है।
उसके तन की छाया भी,
देखना आज दूभर है।।**224**।।

किरनों का आसव पीकर,
मद के झोकों में झूँमू।
बादल-दल के पीछे से,
चुपचाप चाँद को चूँमू।।**225**।।

पागलपन के धागों में,
सारी तरूनाई बुन दूँ।
चंदा की चल पलकों पर,
चुपके से चुम्बन चुन दूँ।।**226**।।

स्वीकृति-संकेत तुम्हारे,
मेरे समीप तक आयें।
घन अंधकार में जैसे,

Http://Kitabghar.tk

कोई प्रदीप जल जाये।।**227**।।

फिर से निर्वासन पाये,
अवसाद-यक्ष उर थामें।
बन कर कुबेर रम जाऊँ।
इन अलकों की अलका में।।**228**।।

फिर विरह-क्षीण क्षण-क्षण हो,
करूणा-यक्षिणी-बिचारी।
संदेश स्नेह का लाये,
मन-मेघदूत बलिहारी।।**229**।।

प्राणों की पुरवाई में,
जब कसक चोट उठती है।
वेदना पुरानी कोई,
बरबस कचोट उठती है।।**230**।।

जब नत-नयनों में सोकर,
कोई सपना जगता है।
तब मन के भीतर-भीतर,
जाने कैसा लगता है।।**231**।।

Kitabghar

पलकों के चपल पुलिन में,
वहती अबोध जल-धारा।
कर गया क्षार जीवन को,
निर्मम लावण्य तुम्हारा।।**232**।।

जीवन-प्रवाह गतिमय हो,
बह चलें व्यथाऐं निर्मल।
धरती को रसमय कर दें,
मेरी करूणा के बादल।।**233**।।

विस्तृत नीरद बन-बनकर,
अवनी-अम्बर को छालूँ।
सारी संसृति के दुख को,
पलकों की ओट छिपालूँ।।**234**।।

खो जाये श्रम-विह्वलता,
अरमानों की माया में।
पलभर को जग सो जाये,
मेरे दुख की छाया में।।**235**।।

पड़ जाय क्षार में साँसें,

Http://Kitabghar.tk

जीवन की बौछारों से।
नन्हा सा हृदय कणों का,
सिंच जाये रसधारों से।।**236**।।

तिलमिला उठें सब तारे,
डगमगा उठे भूमंडल।
उल्काओं के ताण्डव से,
हो खण्ड-खण्ड आखण्डल।।**237**।।

जड़ता समीर में आये,
चाहे ध्रुव भी चंचल हो।
साधना-पंथ पर फिर भी,
मेरा मन अडिग-अचल हो।।**238**।।

पल भर जिसके दर्शन से,
प्राणी निज व्यथा भुला ले।
कमनीय कामना मेरी,
कल्पना-लोक रच डाले।।**239**।।

रसभीनी झंकारों से,
तारों का हृदय हिलाऊँ।
इस विकल विश्व-वीणा में,
स्वर भरा तार बन जाऊँ।।**240**।।

प्रत्येक हृदय स्पंदित हो,
मेरे कंपन की गति पर,
छाले मेरी करूणा का,
संदेश देश-देशान्तर।।**241**।।

सापेक्ष विश्व निर्मित है,
कल्पना-कला के लेखे।
यह भूमि दूसरा शशि है,
कोई शशि से जा देखे।।**242**।।

हो गई धूल, निज छवि को,
फिर भी न खो सकी पृथिवी।
संसृति की पंखुरियों पर,
है बूँद ओस की पृथिवी।।**243**।।

देखता शून्य में यकटक,
मेरा विचार भूखा सा।
माँगती तृप्ति-मधुरियाँ,

Kitabghar

Http://Kitabghar.tk

मेरी अतृप्त जिज्ञासा।।**244**।।

यह गोल-गोल पिंडो से,
पूरित खगोल कैसा है?
शशि के पीछे तारे हैं,
तारों के पीछे क्या है?।।**245**।।

मानव शरीर में कैसे,
सौन्दर्य-सृष्टि होती है।
हत-हृदय हिला देने में,
क्यों सफल दृष्टि होती है।।**246**।।

किसकी किरणों का यौवन,
है इन्द्र-धनुष में झलका।
किससे परमाणु बने हैं,
क्या है उद्गम पुद्गल का।।**247**।।

फल-फूल-छाल-दल देकर,
भू-सुरतरू बन जाता है।
किससे विकास पाते ही,
अंकुर तरू बन जाता है।।**248**।।

Kitabghar

अंगो में भस्म रमा कर,
झूमती पवन चलती है।
किससे वियोग में प्रतिपल,
धूमिल पावक जलती है।।**249**।।

वसुधा है विसुध, हृदय में,
सुधियों का शासक पैठा।
किस पर सर्वस्व लुटाकर,
आकाश शून्य बन बैठा।।**250**।।

जल के उज्ज्वल कण किसकी, मुसकानो से चालित है।
वह कौन शक्ति है जिससे, यह पंचतत्व पालित है।।**251**।।

****

Http://Kitabghar.tk